eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, July-Dec 2018

'विनय पत्रिका – एक चिन्तन'

[1]डॉ0 अवधेश कुमार शुक्ला
[1]सह प्रोफेसर हिन्दी, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बिन्दकी, फतेहपुर उ0प्र0

Received: 15 June 2018, Accepted: 15 July 2018, Published on line: 15 Sep 2018

आज इस धरातल पर शायद ही कोई व्यक्ति हो, जो तुलसीदास से परिचित न हो। तुलसीदास जन्मजात भक्त थे। भज् (सेवायाम्) धातु से 'क्तिन्' प्रत्यय लगाने पर 'भक्ति' शब्द की उत्पत्ति होती है। भगवान का निरन्तर भजन या उनकी अविरल सेवा ही भक्ति है। इसी भक्ति की परिभाषा 'नारद भक्ति सूत्र' में कुछ इस प्रकार दी गयी है–

''सा त्वस्मिन् परम प्रेम रूपा। अमृत स्वरूपा च।''

अर्थात (हे प्राणियों) – परमात्मा से परम प्रेम करना ही भक्ति है, यह भक्ति अमृत रूपा होती है। इसी प्रकार शांडिल्य भक्ति सूत्र में – ''सा परानुरक्तिरीश्वरे'' कहा गया है अर्थात् ईश्वर में परम अनुरक्ति ही भक्ति है।

रामचरित मानस में नवधा भक्ति का विस्तृत विवेचन किया है, किन्तु विनय पत्रिका में उनकी भक्ति 'राम चरण रति' के रूप में हुई है। वे इस संसार के तैंतीस करोड़ देवी देवताओं से राम चरण रति की प्रार्थना करते हुए कहते हैं–देहुँ कामरिपु राम चरन रति तुलसीदास कहँ कृपानिध।

तुलसीदास को इस संसार में यदि भरोसा है, तो मात्र भगवान श्री राम का, वे वृक्ष के प्रत्येक पत्ते को सींचने की बजाय राम रूपी जड़ को ही सींचना चाहते है, जिससे कल्याण सम्भव है। इस संसार में जो सन्त है वही सब कष्टों से दूर है। उपासक को संतोषी परोपकारी, विगत मान, निष्कपट तथा दूसरों का दोष न देखने वाला होना चाहिए। इसलिए उसे सन्त बनने का प्रयत्न करना चाहिए इसी संत स्वभाव को प्राप्त करने की कल्पना करते हुए तुलसीदास जी कहते है कि –

कबहुँक हौ यहि रहनि रहौंगो।
श्री रघुनाथ कृपालु कृपा ते संत–सुभाव लहौंगो
जथालाभ संतोष सदा, काहू सो कछु न चहौंगो।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, July-Dec 2018

विनय पत्रिका में भक्ति के साधनों पर चिन्तन करते हुए तुलसीदास जी उसका जो स्वरूप प्रस्तुत करते है। वह साधना एवं ज्ञान का चरमोत्कष रूप धारण कर समाज के सामने प्रदर्षित हुआ।

विवेक से अभिप्राय ज्ञान का है और ज्ञान भक्ति का आधार माना जाता है। बिना ज्ञान के ब्रह्म का साक्षात्कार असम्भव है तथा ज्ञान से ही माया एवं अज्ञान रूपी अन्धकार को दूर किया जा सकता है। ज्ञान से ही भक्ति भावना अत्यधिक बलवती होती है। गोस्वामी जी ने विवेक (ज्ञान) के सम्बन्ध में एक महत्वपूर्ण बात यह कही है कि केवल ज्ञान की चर्चा करने से, विवेक सम्बन्धी पुस्तकीय ज्ञान प्राप्त कर लेने से, भक्त का कोई लाभ नहीं हो सकता। भक्ति के लिए सबसे आवश्यक बात यह है कि उसे यानि भक्ति रूपी ज्ञान को आचरण में उतारा जाये। जिसे प्रकार अन्धकार में दीप की चर्चा करते रहने से, कभी प्रकाश नहीं हो सकता। उसकी प्रकार मात्र ज्ञान–ज्ञान चिल्लाते रहने से कभी लाभ नही हो सकता–

वाक्य ज्ञान अत्यन्त निपुन, भव पार न पावै कोई।
निसि गृह मध्य दीप की बातन्ह, तम निवृत नहिं होई।।

सासंरिक चकाचौंध के प्रति जो प्राणियों का आकर्षण बढ़ता जा रहा। इस आकर्षण के प्रति वैराग्य की भावना ही नाम 'विरति' है। विरक्ति ही भक्त के मन का आधार है। इसलिए विनय पत्रिका में तुलसीदास जी वैराग्य की भावना को प्रधान रूप प्रदान किया है। भक्त के मन को सांसरिक प्रलोभनों के प्रति वैराग्य का भाव धारण कराकर प्रभु की भक्ति में लीन होने की प्रेरणा देते हुए गोस्वामी जी कहते हैं–

''जो निज मन परिहरै विकारा।
तौ कत द्वैत–जनित संसृति–दुख संसय षोक अपारा''।

स्वामी जी मात्र भौतिक संसाधनों के त्याग को ही वैराग्य का साधन नही मानते संसार में माता–पिता, पुत्र–पुत्री, पत्नी एवं अन्य प्रेमी जनों के प्रति जो लगाव है, उसका भी पूर्ण रूप से त्याग करने पर ही ईश्वर का सानिध्य सम्भव है। आखिर एक समय ऐसा आना ही है, जब ये सभी प्रेमी जन तुझे त्याग देंगे। यह जानते हुए भी तू इनको किस माया में पड़कर नहीं त्याग रहा है–

सुत वनितादि जानि स्वास्थरत, न करू नेह सबहींते

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, July-Dec 2018

अन्तहुँ तोहि तजैंगे पामर! तू न तजै अबहीं ते।।

भक्ति का अगला प्रमुख साधन है सत्संग। बिना सत्संग के ज्ञान की प्रगति अत्यन्त कठिन है। इसलिए गोस्वामी जी सत्संग को भक्ति रूपी अट्टालिका पर चढ़ने की सीढ़ी मानते है। सत्संग करने से ही भक्त में विवेक एवं विरक्ति की भावना का अंकुर फूटता है, जिससे भक्ति रूपी पौधे का जन्म होता है। गोस्वामी जी ने सज्जनों के साथ सत्संगति के प्रभावों का उल्लेख विनय पत्रिका में अनेक स्थानों पर किया है। वे यह मानते है कि इस संसार को पार करने के लिए संतों के पवित्र चरण ही दिव्य नाव के समान है। इसलिए बिना उसके भवसागर पर करना अत्यन्त कठिन है–

भव सागर कहं नाव सुखद सन्तन के चरन।
तुलसीदास प्रयास बिनु, मिलहिं राम दुख हरन।।

बिना सत्संग के ईश्वर की प्राप्ति असम्भव है, सत्संग के प्रभाव से मनुष्य के हृदय से काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद आदि विकार अपने आप समाप्त हो जाते है तथा इनका मन में पुनः उदय नहीं होता। सत्संग मन की दुर्विकारों को नाशक है। सत्संग एक ऐसी औषधि के समान है, जिसके सेवन में शरीर के साथ ही साथ मन के भी सारे विकार दूर हो जाते है। जब व्यक्ति साधुओं के संसर्ग में आता है, तो तमाम प्रकार के गुणों का समावेश उसमें अपने आप हो जाते है तथा मन के अनेक प्रकार के विकार स्वतः समाप्त होते चले जाते है। गोस्वामी जी का मानना है कि सत्संग रूपी अमृत इतना गुणकारी है कि इसका गहरा प्रभाव पड़ता है–

असुर, सुर, नार, नर, यक्ष, गंधर्व, खग, रजनिचर सिद्ध ये चापि अन्ये।
संत संसर्ग त्रैवर्ग परमपद प्राप्य, निष्प्राप्य गति त्वयि प्रसन्ने।।

इस प्रथ्वी पर जो कुछ हो रहा है, वह भी राम की कृपा से तथा जो कुछ हो चुका है वह भी राम की कृपा से तथा जो कुछ होगा वह भी राम की कृपा से होगा। राम की कृपा के बिना इस धरती पर कुछ भी सम्भव नही है। गोस्वामी जी राम के अनन्य भक्त है उनकी अटूट आस्था तथा विश्वास है। भगवान श्री राम में ,इसलिए राम की कृपा पर ही भक्त में भक्ति का उदय सम्भव है। माया और

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, July-Dec 2018

मोह जो संसार सागर से पार जाने में सबसे बड़ा बाधक है वह भी राम की कृपा से दूर हो सकता है।

माधव असि तुम्हारी या माया।
करि उपाय पचि मरिय तरिय नहिं जब लगि करहू न दाया।।

माया रूपी शरीर में भ्रम, मन के रूप में विद्यमान रहता है और यह भम्र रूपी मन जिधर चाहता है उधर अज्ञानी शरीर को भटकाता रहता है। भम्र के कारण ही सब कुछ जानता हुआ तथा देखता हुआ मन इस संसार के आकर्षण में बंधा रहता है। इस भम्र को जड़ से नाश करने हेतु राम की भक्ति रूपी अमृत का सेवन आवश्यक है। इस संसार में मनुष्य को सबसे अधिक भय अपने शत्रु से होता है, किन्तु जिसके ऊपर भगवान श्री राम की कृपा हो जाती है, उसका कोई बाल बाँका नहीं कर सकता है यही बोध कराना गोस्वामी जी का परम् उददे्श्य है–

जो पै कृपा रघुपति कृपाल की
बैर और के कहा सरै।
होइन बॉकी बार भगत को,
जो कोउ कोरिउ उपाय करै।।

राम से सान्धि्य प्राप्त करने के मार्ग में जपने का भी महत्वपूर्ण योगदान है। राम नाम की महिमा का गुणगान तुलसी के सम्पूर्ण साहित्य में मिलता है। यहाँ यदि हम यह कहें कि गोस्वामी जी की भक्ति का मूल आधार ही राम के नाम का जप है, तो अतिशयोक्ति न होगी। यद्यपि गोस्वामी जी के पूर्व भी भक्तों ने नाम जप पर बहुत बल दिया है। 'महारामायण' में तो यहाँ तक कहा गया है कि –करोडों तीर्थ यात्राएँ एवं दान, करोड़ो योग–व्रत, कोटिशः मंत्र जाप, करोड़ो जप, करोड़ो ज्ञान–विज्ञान ध्यान एवं समाधियाँ भी राम नाम जप के बराबर नहीं हो सकती है–

कोटि तीर्थानि दानानि, कोटि योगव्रतानि च।
कोटि यज्ञजपाश्चैव तपसः कोटि कोटियः।।
कोटि ज्ञानैश्च विज्ञानै कोटि ध्यानसमाधिभिः।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, July-Dec 2018

सत्यं वदामि नैस्तुल्यं रामनाम च वर्तते।।

राम नाम जप की महिमा तो इतनी महान है कि यदि भक्त अज्ञानतावश उसका उल्टा जप भी करता है, तो भी उसको राम नाम के जप का लाभ मिलता है–'उल्टानाम जपा जग जाना बाल्मीकि भये ब्रह्म समाना' से यह बात और भी पुष्ट हो जाती है। विनय पत्रिका में तुलसीदास जी ने बताया है कि जो भक्त राम के नाम का जप करता है, उसका शारीरिक, मानसिक एवं दैविक ताप नष्ट हो जाता है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष–चारों पुरूषार्थ राम नाम जप से प्राप्त हो जाते है। श्री राम के नाम में अपनी आस्था प्रकट करते हुए गोस्वामी जी कहते हैं–

राम नाम छाड़ि जो भरोसो करै और रे।
तुलसी परोसो त्यागि माँगे कूर कौर रे।।

गोस्वामी जी अन्य देवताओं का भी सम्मान करते है, किन्तु उन्हें तो अपार आस्था अपने राम में ही है। वे कहते है कि जिसे किसी दूसरे पर विश्वास हो, वह उसका भरोसा करे, मुझे तो अपने श्री राम के प्रति ही अनन्य विश्वास है

भरोसो जाहि दूसरों सो करो।
अपने भलो राम नामाहि ते तुलसिहि समुझि परो।।

वे तो यहाँ तक कह डालते है कि 'एक भरोसो एक जग एक आस–विश्वास, एक राग घनश्याम हित चातक तुलसीदास'। भक्ति प्राप्ति के मार्ग में इन सारे क्रिया–कलापों के सम्पादन के साथ ही साथ गोस्वामी जी शरणगति को भी अतूलनीय स्थान प्रदान करते है।

शरणागति की यह प्रवृत्ति भक्त परम्परा में सद्यपि देवी भाग्वत् से ही प्रारम्भ हो चुकी थी–

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे।
सर्वस्यातिंहरे देवी नारायणी नमोस्तुते।।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, July-Dec 2018

शरणागत की इस परम्परा को तुलसी की विनय पत्रिका में पुष्ट रूप प्रदान होता है। भक्त का भगवान की शरण में आना ही शरणागति है। विनय पत्रिका में गोस्वामी जी ने शरणागति के महत्व को स्वीकार करते हुए कहा है –'दास तुलसी सरन आयो, रखिये अपने'। गोस्वामी जी को इस संसार में राम के शरण के अतिरिक्त कुछ सुझता ही नहीं है। वे तो भगवान श्री राम से ही कहते है कि हे भगवान यदि आप अपने चरणों में स्थान नहीं देना चाहते, तो आप ही बताइये कि मै आपके चरणों को छोड़कर कहाँ जाऊँ–

जाऊँ कहाँ तजि चरण तुम्हारे।
काको नाम पतित पावन जग, केहि अति दीन पियारे।।

इस प्रकार हम देखते है कि तुलसीदास जी की विनय पत्रिका भक्ति के उन सभी रूपों को सांगोपांग कलश है, जो भक्ति के रस से लबा–लब भरा हुआ है। लबा–लब भरे कलश 'विनय पत्रिका' को जो भी भक्त मन से हाथ लगाता है, उस पर भक्ति का कुछ न कुछ अंश अवश्य ही छलक जाता है, जिससे संसार सागर से पार जाने का भक्त का मार्ग प्रशस्त हो जाता है। विनय पत्रिका कृपा प्राप्ति हेतु लिखी गयी चिट्ठी है, जो भगवान राम यहाँ अवश्य पहुँचती है तथा उस पर भगवान श्री राम अवश्य विचार करते हैं तथा उपने भक्त का कल्याण आवश्यक करते है, किन्तु यह चिट्ठी भी भक्त तभी लिख पाता है, जब राम की कृपा होती है, उनकी कृपा के बिना संसार में कुछ भी नही हो सकता है।